National Journal of Advanced Research
Online ISSN: 2455-216X; Impact Factor: RJIF 5.12
www.allnationaljournal.com
Volume 2; Issue 6; November 2016; Page No. 46-48

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गांधी के अहिंसात्मक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता

विवेक पाठक

पी–एच.डी अहिंसा एवं शांति अध्ययन, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र, भारत।

सरांश

महात्मा गांधी के विचारों में अहिंसा का महत्व सिर्फ कुछ क्षणों के लिए न हों करके बल्कि एक लंबी प्रक्रिया तक चलने वाली निरंतर लड़ाई थी जहां हिंसा कुछ क्षणों के बाद अपना दम तोड़ देती तो वहीं अहिंसा के जरिये एक निश्चित सफलता पायी जा सकती है इस बात से बिल्कुल भी इंकार नहीं किया जा सकता है, मनुष्य का प्रारम्भिक दौर हिंसक गतिविधियों से भरा रहा है और हिंसा के बल पर ही अपने को युगों युगों से स्थापित करता आ रहा है लेकिन हिंसा के साथ सत्य, दर्शन, अहिंसा, न्याय और शांति जैसे महत्वपूर्ण साधन भी विकसित होते रहे है जिन्हे नकारा नहीं जा सकता है। आज के बदलते परिवेश में हिंसा यदि बढ़ी है तो उसे रोकने का काम भी अहिंसा के द्वारा ही किया जा सकता है। आगे प्रस्तुत पेपर में इन्ही सब बातों पर विस्तारपूर्वक चर्चा किया जायेगा की हिंसा की तुलना मे अहिंसा का कितना महत्व हैं?

मूल शब्द: महात्मा गांधी, हिंसा, अहिंसा, साधन

प्रस्तावना

जवाब कितने भी हो सकता हैं, इतना तय हैं कि इन्हें गाँधी के विचारो के भीतर ही खोजा जाना चाहिए जब इन्हें तलाशा जायेगा तो ऐसे विचार भी मिलेंगे जो आधुनिकतावादियों के साथ–साथ गांधीवादियों को भी नागवार गुजरेगी इससे पहले की हम अनेक पहलुओं पर जाए हम हिंसा की वैधता पर बात कर लें आज हम जिस शब्द की वैधता की बात करने जा रहे हैं वह हिंसा हैं हम सभी लोग जानते हैं की किसी वस्तु का महत्व तब तक ही हैं।

जब तक उसे लेने वाला उपभोक्ता मौजूद हो मान लीजिये कि किसी भाषा की उत्पत्ति अचानक ही हुई अर्थात प्रकृति के द्वारा मनुष्य घुमंतू था, प्रकृति के द्वारा जो घटना घटती गयी वह अपने अन्दर कि आवाज से उसे चिंहित करने लगा उसी प्रकार हिंसा की वैधता की पुष्टि आज से नहीं आदिम समाज से होती आ रही हैं जैसा की मैंने पहले कहा था की मनुष्य घुमंतू प्राणी था बाद में वह कुछ लोगों के साथ एक समुदाय में रहने लगा तथा उसके पश्चात लोगों के बीच श्रम का विभाजन होने लगा।

हेनरी लेविस मार्गन के शब्दों में "श्रम का स्पष्ट रूप से विभाजन महिला और पुरुष के शारीरिक सम्बंध से स्पष्ट होता हैं इसी के आगे चलकर परिवार बना तो निजी सम्पति बनी अब इस सम्पति को प्राप्त करने के लिए परिवार में लड़ाई भी होगी तो वहां हिंसा होना अनिवार्य हैं कहने का अर्थ हैं की परिवार, समुदाय, विचार, मनुष्य की संतान, हिंसा की वैधता को सिद्ध करते हैं यही सब चलकर एकल परिवार को जन्म देती हैं यानि सम्पति को लेकर जो परिवारों में लड़ाई होती हैं उसी ने एकल परिवार को जन्म दिया हालाकि इसी ने सयुंक्त परिवार को भी तोड़ कर रख भी दिया यूथ का जन्म कहाँ होता हैं।

यूथ यानि नया युवा वर्ग नयी पीड़ी का जन्म कहीं भी हो सकता हैं यह पशुओ के समाज में भी और मनुष्यों का समाज में भी ऐसी ही बातो का उल्लेखे करते हुए एस्पिनास ने लिखा की दोनों में सिर्फ सभ्यता और संस्कृति का अंतर हैं *(एस्पिनास, पशु समाज, १८७७)* लेकिन दोनों समाजों में हिंसा होती इसका अर्थ हैं कि जो सभ्यता और संस्कृति दूसरे लोगों को पसंद हो वह अन्य लोगों को भी पसंद हो यह कोई जरुरी नहीं है अतः किसी के लिए हिंसा सही हैं तो किसी के लिए गलत हैं।

रविन्द्र नाथ टैगोर कहते हैं कि यदि मनुष्य में से संस्कृति और सभ्यता निकाल दिया जाये तो वह भी पशुओं की तरह ही व्यवहार करेगा इसलिए १९२२ में जो कुछ भी असहयोग आन्दोलन में हुआ उसके दोषी सिर्फ और सिर्फ उनके अन्दर का जानवर था।

कार्ल–मार्क्स ने कहा हैं की दुनिया के मजदूर एक हो जाओ इसका अर्थ था कि मजदूर अपने श्रम की महत्ता को समझें और पुंजीपतियों के खिलाफ एक हो करके उनके खिलाफ विद्रोह कर दें इस में भी हिंसा छिपी थी पर यह हिंसा काफी सफल भी हुई इसी का समर्थन करते हुए लेनिन ने कहा कि सामाजिक क्रांति का सबसे गहरा कारण नई उत्पादन शक्तियों और पुराने पड़ गये उत्पादन समबन्धों के बीच उत्पन्न अंतर्विरोध का होना है।

इससे स्पष्ट होता हैं कि कोई क्रांति तभी सफल होगी जब जनता की भागीदारी होगी चाहे वह सामाजिक क्रांति सफल हो या असफल इसी तरह मजदुरों द्वारा की गई क्रांति हिंसा पर आधरित थी पर वह वैध थी क्योंकि यह सिर्फ अपने लिए नहीं बल्कि सम्पूर्ण सामाज में फैली असमानता के विरुद्ध थी यही हाल आदिवासी इलाकों में है जहां हर रोज हिंसा हो रही है इसका कारण सरकारी प्रसाशनिक, राजनीतिक हस्तक्षेप का बढ़ना हैं कोई भी आदिवासी यह नहीं कहता है कि आप यहाँ फैक्ट्री नहीं लगायें आप फैक्ट्री लगायें पर हमारी भी कुछ शर्तें हैं आप हमारी संस्कृति में हस्तक्षेप नहीं करेगे, फैक्ट्री में काम देंगे पर सरकार का अड़ियल रवैया उन्हें हिंसा करने पर मजबूर कर देता है कहने का अर्थ है कि राज्य द्वारा प्रायोजित आत्याचार और हिंसा नक्सलियों के द्वारा की जा रही हिंसा को वैधता प्रदान करते हैं लेकिन अब परिवर्तन हो रहा हैं ज्ञान कि नई धार वह थी शिक्षा का विस्तार, शिक्षा के द्वारा लोगों के अन्दर चेतना जागी वही चेतना गुलामी को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

इसी का नतीजा हैं कि जहां हिंसा लोंगों को एक साथ लाने के बाद बिखेर देती हैं वही गाँधी के विचारो कों आज के समय में दर्शन के संकट से परेशान मानवता समझने लगी है शायद मनुष्य के भविष्य के लिए इसे और भी समझने की जरुरत है इस बात से उग्र किस्म के आधुनिकतावादी और भारतीय मूल के पश्चिम सोच

वाले कुछ बुद्धिजीवी भले ही सहमत न हों पर दुनिया के बड़े हिस्से के बौद्धिक जगत में गाँधी के विचारो का पुनर्पाठ यह दिखाता हैं कि गैर–यूरोपीय ज्ञान परम्पराओं के बारे में उनके विचार मानव जाति के लिए बेहद उपयोगी हैं इस संदर्भ में कुछ उदारहरणों के विश्लेषण से बात और भी स्पष्ट होती है।

जितना महत्व हिंसा का हैं उतना ही महत्व अहिंसा का है यह सही हैं कि अंग्रेजों की प्रताड़ना से परेशान होकर के ही १९२२ में २१ पुलिसकर्मियों को जनता ने आग के हवाले कर दिया था यह सही है की अभाव मनुष्य द्वारा स्थापित नियम–कानून का उल्लंघन करने को प्रोत्साहित करते हैं, परन्तु कुछ बहुत ज्यादा हिंसक कार्य कर गुजरने की प्रेरणा, हिम्मत और योग्यता देने से पहरेज करना चाहिए भूख से दुर्बल आदमी लड़ने में तो कमजोरी का अनुभव करता ही है, उसे नारा लगाने में भी परेशानी होती है यहीं से हिंसा का महत्व कम होता जाता हैं और अहिंसा का महत्व आरम्भ हो जाता हैं १९२२ में गाँधी जी असहयोग आन्दोलन के द्वारा यही बताना चाहते थे कि हिंसा के द्वारा सिर्फ और सिर्फ शारीरिक कमजोरी के अलावा कुछ नहीं होगा दुनिया में ऐसे अकाल पड़े हैं, जो बिना किसी राजनैतिक विद्रोह आपसी लड़ाई और बिना वर्चस्व के ही गुजर गया।

उदारहण के लिए *१८४०* में आयरलैंड का अकाल इतनी शांति से बीता कि उनके ही बीच होकर शैनन नदी से खाने–पीने से भरे जहाज पर जहाज गुजरते चले जाते थे और वहा भूख से तड़पते लोगों ने एक बार भी हमला नहीं किया कहने का अर्थ हैं कि जिस देश में खाने–पीने का सामान का अकाल पड़ा हो वहाँ हिंसा करके अपनी कमजोरी में वृद्धि करना मूर्खता ही है यही कारण हैं कि आयरलैंड के लिए १८४० का वर्ष बहुत ही शांति का समय रहा यही काम गाँधी जी करने की कोशिश कर रहे थे ताकि असहयोग आन्दोलन पूरे भारत में शांतिपूर्ण तरीके से विस्तार करके आजादी को प्राप्त कर लिया जाये और धन–जन की कम हानि हो जब हम किसी अन्याय या हिंसा का सक्रिय अहिंसक प्रतिरोध भी करते हैं तो वह न केवल अन्याय की मिटाने के लिए होता हैं, बल्कि अन्याय रुपी आत्मा और स्वरूपी आत्मा के द्वैत को भी मिटाता हैं। क्योंकि अन्य के प्रति उत्तरदायित्व का अनुभव करने का तात्पर्य अन्य में निहित स्व की तलाश करने में प्रवृत होता हैं।

गाँधी ने आधुनिकता के इसी दंभ कि प्रतिक्रिया में अहिंसा का मार्ग सुझाया और अहिंसा के लिए गाँधी का तर्क मीमांस की कसौटी पर बिलकुल खरा उतरता हैं सामाजिक क्रांति का अर्थ समाज के बौद्धिक जीवन तथा उसकी संस्कृति में गहन परिवर्तन से भी हैं यही कारण हैं कि हिंसा और अहिंसा में सिर्फ "अ" का अंतर हैं यही एक शब्द किसी भी क्रांति को सफल या असफल बना सकती हैं,पर सबसे बड़ा प्रश्न हैं कि क्रांति का स्वरूप क्या होना चाहिए ? हालांकि कोई भी क्रांति दो या चार लोगों से ही शुरू होती हैं पर सफल जनता कि भागीदारी से ही होती हैं इसका सबसे अच्छा ऊदाहरण अन्ना का आन्दोलन तथा जो दिल्ली में जनता की सहभागिता से तो सफल हुआ पर वही मुंबई में जनता के न जाने से आन्दोलन पर काफी प्रभाव पड़ा और आन्दोलन कुछ हद तक असफल भी रहा पर यह कहना आन्दोलन पूरी तरह से असफल रहा तो यह गलत तथ्य हैं क्योंकी इसी आन्दोलन की वजह से ही दिल्ली के साथ–साथ पूरे भारत में कांग्रेस कि बुरी तरह से हार हुई और उनका जनाधार भी कम हुआ यह सब इसी आन्दोलन का नतीजा था यही कारण हैं जो असहयोग आन्दोलन १९२२ में गाँधी जी नेतृत्व में कुछ हद तक असफल हो गया तथा वही १९३० के सविनय अवज्ञा में भारी सफलता मिली थी इसलिए हर क्रांति में हिंसा और अहिंसा का महत्व हमेशा ही रहता हैं लेकिन सबसे बड़ा सवाल हैं कि अहिंसा को कैसे लागू किया जाए ? इसका एक ही जवाब वह है समझौता।

सभी लोग जानते हैं कि युद्ध हमेशा खतरनाक ही होता हैं। इसमें कई मासूम जिंदगी दांव पर लगी होती हैं, लेकिन इस के बावजूद युद्ध होते हैं युद्ध होने के कई कारण हो सकते हैं निजी सम्पति की लड़ाई, अस्तिव की लड़ाई, वर्चस्व कि लड़ाई इत्यादी यदि सभी देश आपस में यह संधि कर लें कि "अब हम युद्ध नहीं करेगे,सभी कार्य शांतिवार्ता से ही करेंगे तो सच मानिये कि अमेरिका एक शक्तिशाली देश नहीं रह जायेगा, क्योंकी युद्ध ही एक ऐसा साधन हैं जो दूसरे देश को अपनी ताकत दिखाने का मौका प्रदान करता है क्योंकि यदि युद्ध ही नहीं होगें तो ये देश अपना हथियार कहाँ बेचेंगे ? जब हथियार ही नहीं होगें तो सभी देश कुछ हद तक शांति की प्रक्रिया को अपनाएगें असहयोग आन्दोलन भी शुरू करने का भी यही उद्देश्य था कि लोग शांति प्रक्रिया को अपनाते हुए भारत कि आजादी को प्राप्त करें असहयोग आन्दोलन की सबसे बड़ी सफलता थी कि उस आन्दोलन कों कई बरसों बाद एक अच्छा नेता मिला था जिसे पता था कि कहाँ रुकना हैं और फिर कब चलना हैं असहयोग आन्दोलन के कारण ही लोगों के अन्दर देश प्रेम कि भावना जागी, स्वदेशी वस्तुओं कों अपनाया गया, राष्ट्रवादी विद्यालयों कि स्थापना की गई,लोगों कों एकजुट इसी आन्दोलन ने किया यही असहयोग आन्दोलन कि सबसे बड़ी सफलता थी

अब भारत को आजाद हुए ६५ साल से भी ज्यादा हो गए हैं आज भी आंदोलन हो रहे हैं हिंसा और अहिंसा भी हों रहा हैं लेकिन १९२० के असहयोग आन्दोलन और २०१४ के असहयोग आन्दोलन में अब फर्क आ गया हैं यूँ कहें तो आन्दोलन का स्वरूप ही बदल गया हैं जिस तरह से प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल में सामन्तवादी व्यवस्था थी १९४७ में आजादी के बाद इसे समाप्त कर दिया गया पर सच यह हैं कि सामन्तवादी व्यवस्था खत्म नहीं हुई हैं आज यह एक पूँजीवादी के रूप में देश के हर कोने में मौजूद हैं इसी तरह असहयोग आन्दोलन भी २१ ईस्वी सदी में खत्म नहीं हुआ बल्कि इसका स्वरूप ही बदल गया

चाहे वह जयप्रकाश नारायण का इंदिरा गाँधी के विरुद्ध में की गयी सम्पूर्ण क्रांति हो या निर्भया कांड में दिल्ली में किया गया युवाओं का आन्दोलन हों इन दोनों में हिंसा हुई थी पर दोनों क्रांतियो में सफलता जरुर मिली थी दोनों क्रांतियों में जनता ने सरकार का पूरी तरह से बहिष्कार किया और देश की व्यवस्था को ही बदल कर रख दिया अब यह सत्य प्रकट हो गया हैं कि धरती गर्म हो रही हैं हिमालय का ग्लेशियर पिघल रहा हैं नदियाँ प्रदूषण का शिकार हो चुकी हैं जंगल का विनाश बड़े पैमाने पर हो चुका हैं जमीन उसर हों रहे हैं पलायन कि समस्या बढ़ रही हैं इसका समाधान क्या हैं ? यह सब प्रश्न आज से ही नहीं गाँधी के समय से ही मौजूद हैं।

निष्कर्ष

अब समय आ गया हैं कि हम गाँधी के विचारो कों समझें और जाने आधुनिकता अपनी सफलता के नशे में इतना मस्त हो गयी है कि संवाद की संभावना को ही भूल गयी है गाँधी के दैहिक अवसान से शायद इस मूल्य को पुनः स्थापित करने वाली रोशनी बुझ गयी थी ! बुझी नहीं थी,शायद धीमी हो गयी थी इसलिए दुनिया भर में जो लोग आज सड़क पर उतर रहे हैं उन्हें अभी भी रोशनी गाँधी से ही मिल रही हैं चाहे किसी भी आन्दोलन में हिंसा हो या अहिंसा गाँधी जी के सिद्धांतों को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता हैं अंत में,मैं अपनी बात इस शब्द से खत्म करना चाहूँगा जो वाकई में गाँधी के बातों को मजबूती प्रदान करती हैं.

"जो कुछ भी हो.....विजय हमारी होगी"

(एन.जी चेर्नीशेव्स्की)

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऐगेल्स, फ्रेड्रिक, परिवार राज्य और निजी सम्पति, पृष्ठ ३८।
2. जार्ज डैनिसन,बच्चो का जीवन, पृष्ठ, १।
3. सेन, अमर्त्य, हिंसा और अस्मिता का संकट पृष्ठ, १५०।
4. आचर्य,नन्द किशोर, सत्याग्रह की संस्कृति पृष्ठ, ११।